एनांसी ने ढूंढा एक मूर्ख

एनांसी ने ढूंढा एक मूर्ख

एक समय पश्चिम अफ्रीका में एनांसी नाम का एक व्यक्ति रहता था. वह आलसी और लालची था और हर पल किसी न किसी को ठगने की बात सोचता रहता था. एक दिन उसने अपनी पत्नी, ऐसो, को कहा कि मैं मछलियों का धंधा करूंगा.

ऐसो बोली, "मेरे एक कान ने तुम्हारी बात सुन ली है. दूसरा कान प्रतीक्षा कर रहा है."

एनांसी चालाकी से हँसने लगा, *"हह, हह, हह."* वह बोला, "मैं कोई मूर्ख व्यक्ति ढूंढ कर उसे अपना भागीदार बनाऊँगा-कोई ऐसा जो सारा काम करेगा जबकि सारी मछलियाँ मुझे मिलेंगी."

"हा!" ऐसो ने कहा. "तुम्हें ऐसा मूर्ख कहाँ मिलेगा?" उसने पानी का मटका अपने सिर पर रखा और पानी लेने चली गयी.
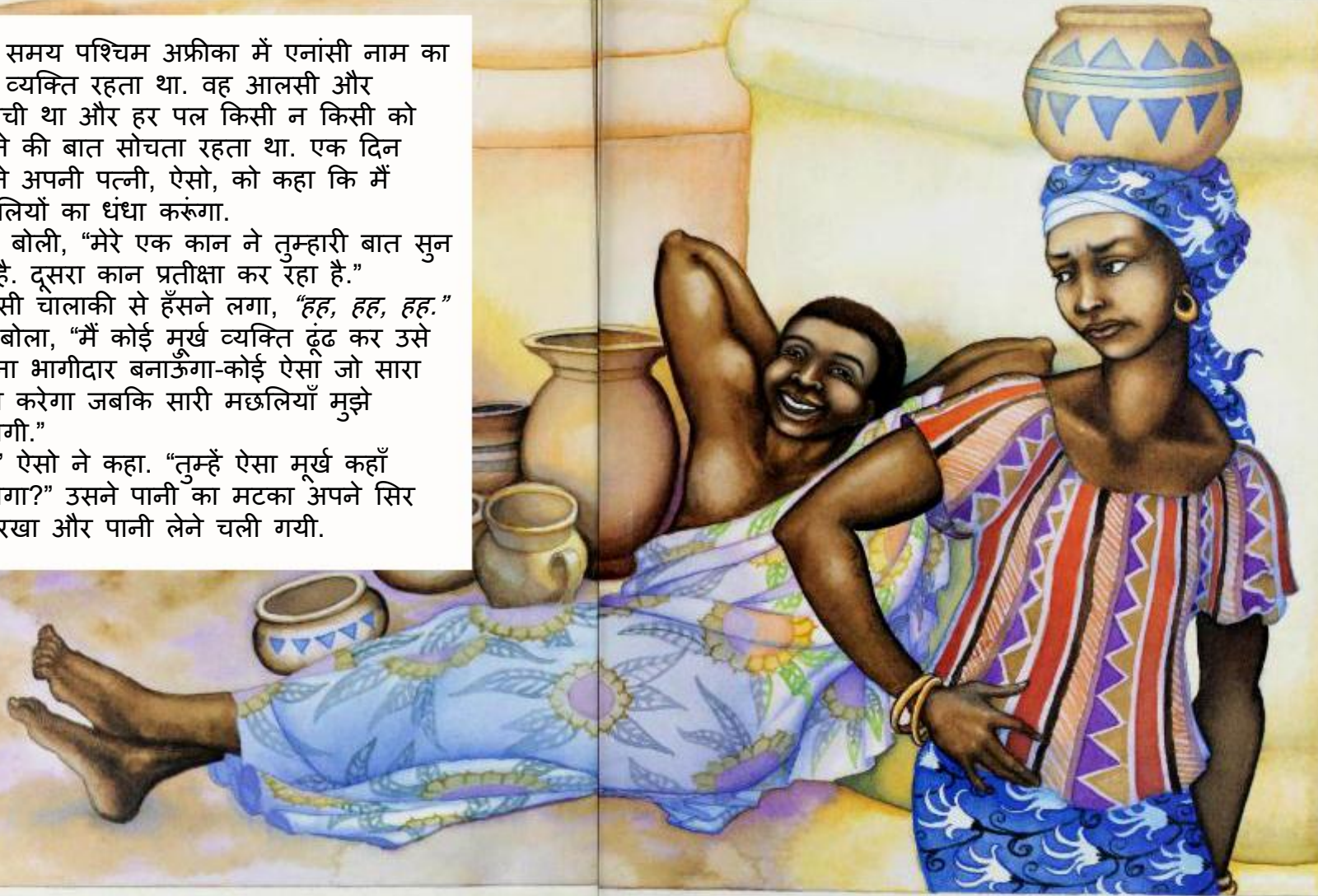
नदी किनारे ऐसो के भेंट बोंसू की पत्नी ललउहा से हुई.
ललउहा ने पूछा, “कैसी हो, ऐसो?”
“मैं तो बिलकुल ठीक हूँ,” ऐसो ने कहा. “लेकिन मेरा पति कुछ ठीक नहीं हैं. वह कह रहा था कि अब वह मछलियाँ पकड़ेगा. और वह एक मूर्ख आदमी को ढूंढ कर अपनी साथी बनाएगा-कोई ऐसा आदमी जो सारा काम करेगा और जबकि सारी मछलियाँ मेरे पति को मिलेंगी.”
ललउहा घर चली गयी और उसने पति, बोंसू, को वह सब बताया जो ऐसो ने उससे कहा था.
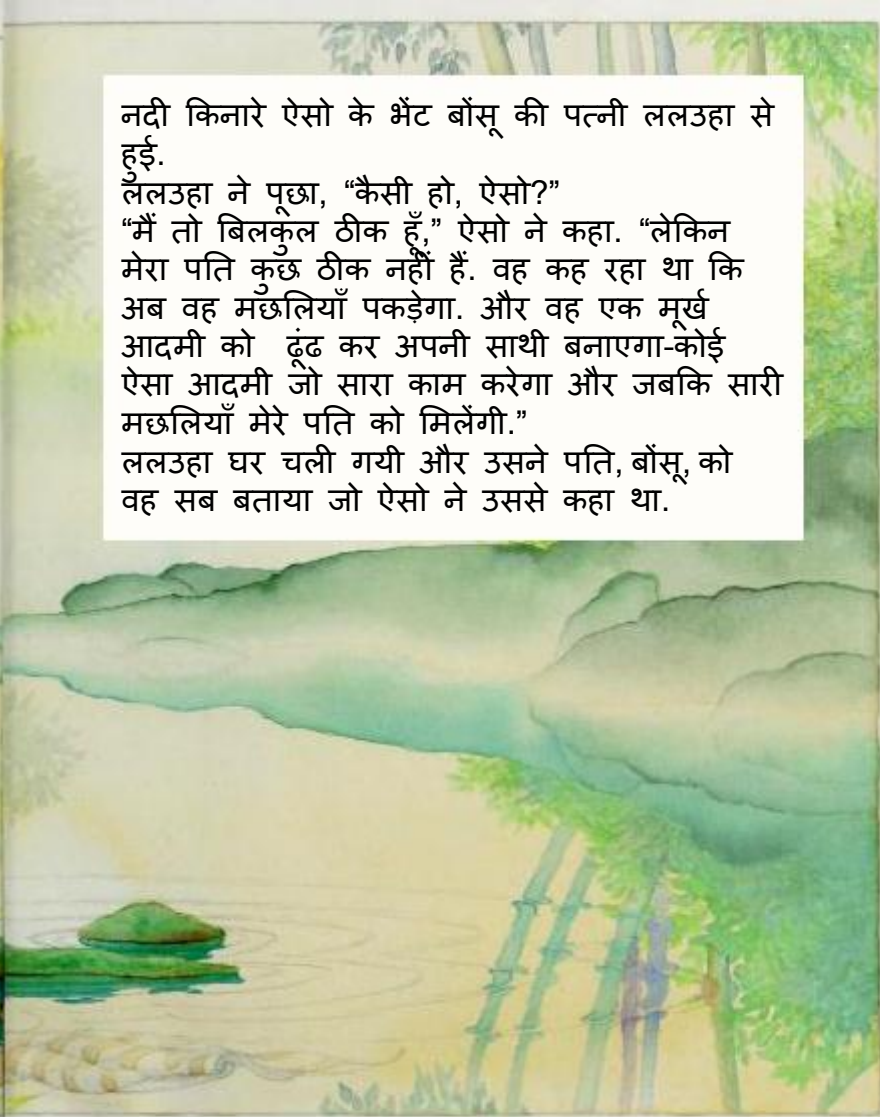
बोंसू ने इस बात पर कुछ समय के लिये विचार किया. फिर उसने कहा, "मैं एनांसी के साथ मछलियाँ पकडूँगा. इस चालाकी की खेल में मैं उसे ही मात दूंगा!"

बोंसू एनांसी के घर आया. उसने कहा, "एनांसी, मैं तुम्हारे साथ मछलियाँ पकडूँगा. एक के बजाय दो लोग अधिक मछलियाँ पकड़ सकते है."

बोंसू के सुझाव पर एनांसी को आश्चर्य हुआ. उसे थोड़ी घबराहट भी हुई. बोंसू को चकमा देना सरल न था. लेकिन उसने कहा, "बहुत अच्छा. पहले हमें मछली पकड़ने वाला पिंजरा बनाना पड़ेगा."

एनांसी और बोंसू पिंजरा बनाने के लिये सामग्री ढूंढने लगे. उन्हें ताड़ के कुछ पेड़ दिखाई दिये. तब बोंसू ने कहा, "एनांसी, मुझे चाकू दो. मैं पेड़ की डालें काटूँगा. और मेरी जगह तुम थक जाना. तुम्हारा यही काम होगा."

"रुको, मेरे भाई," एनांसी चिल्लाया. "तुम्हारी लिये मैं क्यों थकूं?"

"जब कोई काम किया जाता है तो किसी न किसी को तो थकना पड़ता है," बोंसू ने कहा. "अगर मैं डालें काटता हूँ तो तुम इतना तो कर ही सकते हो कि सारी थकावट तुम ले लो."

एनांसी बोला, "थकना सबसे कठिन काम है! मैं स्वयं डालें काटूँगा. और मेरी जगह तुम्हें थकना होगा!"

तो बस एनांसी ताड़ के पेड़ पर चढ़ गया और डालें काटने लगा.

बोंसू पेड़ के निकट बैठ गया. और हर बार जब एनांसी कोई डाल काटता तो बोंसू करहाता, *"क्रा...उंह, क्रा...उंह, क्रा...उंह!"*

शीघ्र ही कटी डालों का एक ढेर वहां इकट्ठा हो गया.
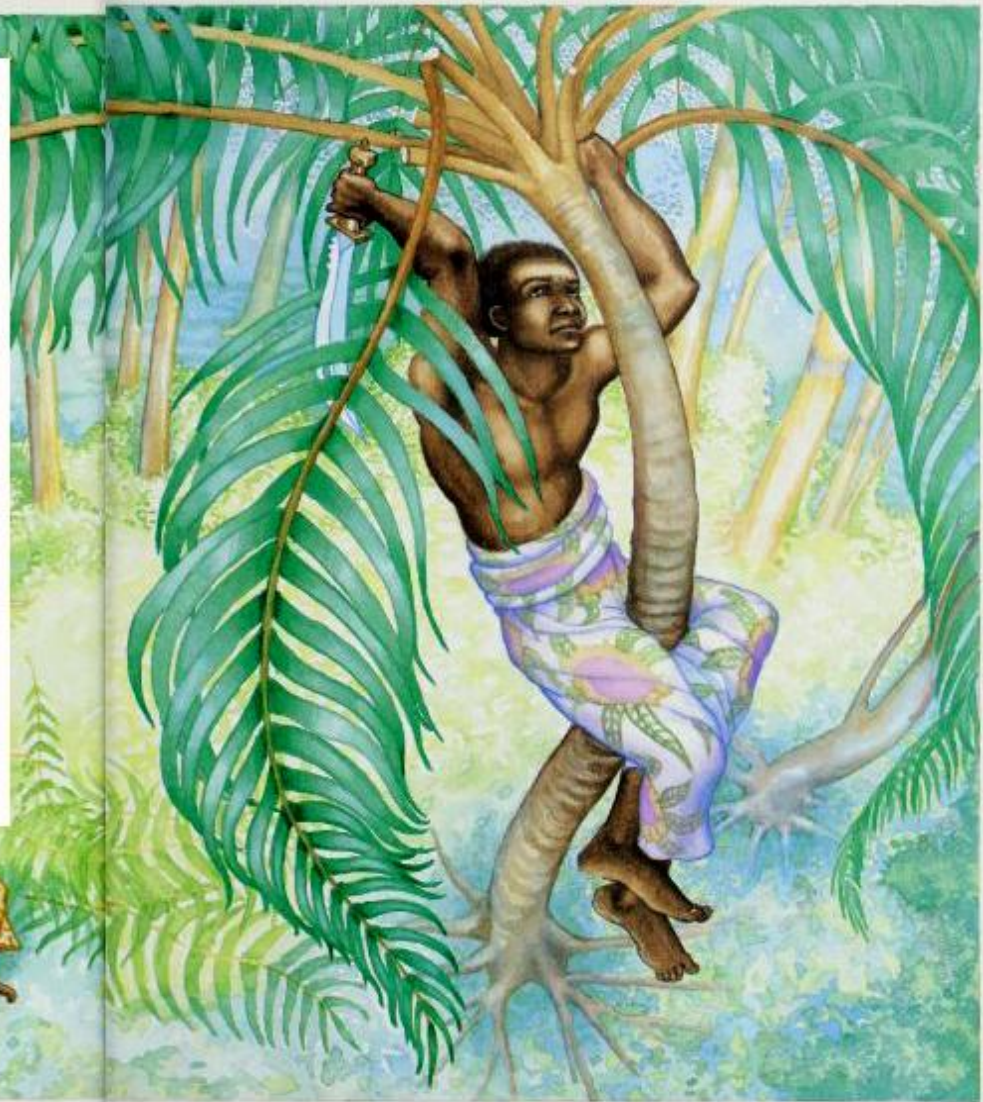
फिर बोंसू ने कहा, “अब तुम बैठ जाओ, एनांसी. मैं इन डालों से पिंजरा बनाता हूँ. बस मेरी अँगुलियों में घाव होंगे और मेरी पीठ में दर्द होगा. लेकिन अगर मेरी जगह तुम यह कष्ट झेल लोगे तो मैं सारा काम कर दूंगा.”
“रुको, मेरे भाई,” एनांसी बोला. “तुम आसानी से सब कष्ट सह रहे हो. मैं स्वयं मछलियाँ पकड़ने का पिंजरा बना लूंगा.”
और जब एनांसी काम कर रहा था, बोंसू बैठ सारा कष्ट झेल रहा था. वह अपने माथे से पसीना पोंछता, अपनी पीठ सहलाता, और बीच-बीच में करहाता, *“ड़, ड़, ड़.”*
बोंसू ने उतना हंगामा मचा रखा था कि अपने कष्टों की ओर एनांसी का ध्यान ही न गया. बुनते और बांधते, बुनते और बांधते आखिरकार उसने पिंजरा बना ही लिया.
“अरे, कितना बढ़िया पिंजरा तुम ने बनाया है!” बोंसू ने चिल्ला कर कहा और उस पिंजरे को अपने सिर पर उठा लिया. “अगर नदी की ओर जाते समय रास्ते में कुछ लोग मिल गये तो वह सब यही सोचेंगे कि इसे मैंने बनाया है.”
“रुको,” एनांसी चिल्लाया. “मेरे काम का श्रेय तुम्हें क्यों मिले?” और इतना कह कर, पिंजरा बोंसू के सिर से उठा कर उसने अपने सिर पर रख लिया.

जब वह दोनों नदी के किनारे पहुंचे तो बोंसू ने कहा, "एनांसी, इस नदी में मगरमच्छ हैं. मुझे यह पिंजरा नदी में लगाने दो. अगर मगरमच्छ ने मेरी टाँग काट ली तो मेरी जगह तुम मर जाना."

"रुको, मेरे भाई," एनांसी चिल्लाया. "क्या तुम मुझे मूर्ख समझते हो? मैं स्वयं यह पिंजरा लगाऊँगा. अगर किसी मगरमच्छ ने मुझे पकड़ लिया तो तुम मेरी जगह मर जाना."

एनांसी पिंजरा लेकर नदी में उतर गया और पानी में लगे सरकंडों के पास आ गया. जब नदी के तल पर वह पिंजरे को एक सरकंडे के साथ बाँध रहा था, उसका हाथ एक क्रे-फ़िश को जा लगा. फिर *फटाक!* एक बड़े-से पंजे ने उसकी छोटी अंगुली को जकड़ लिया.

"वाआआआआ!" एनांसी चीखा और पानी को उछालते हुए वह नदी से बाहर आया. क्रे-फ़िश उसके हाथ से ऐसे लटक रही थी जैसे एक मछली कांटे से लटकी होती है.

बोंसू ने क्रे-फिश के पंजे खोल कर एनांसी की अंगुली छुड़ाई. फिर उसने कहा, “यह अब तक की सबसे बड़ी क्रे-फ़िश है जो मैंने देखी है. ऐसो और तुम्हारे खाने के लिये यह पर्याप्त होगी.”
“इसे तुम ले लो,” एनांसी ने अपनी लहूलुहान अंगुली पर पत्ता लपेटते हुए कहा. “जो कुछ इस पिंजरे में मुझे कल सुबह मिलेगा मैं वह ले लूंगा.”
ललउहा ने जब वह बढ़िया क्रे-फ़िश देखी जो बोंसू लाया था तो उसने ख़ुशी से ताली बजाई. और उस मछली को वह झटपट पकाने लगी.
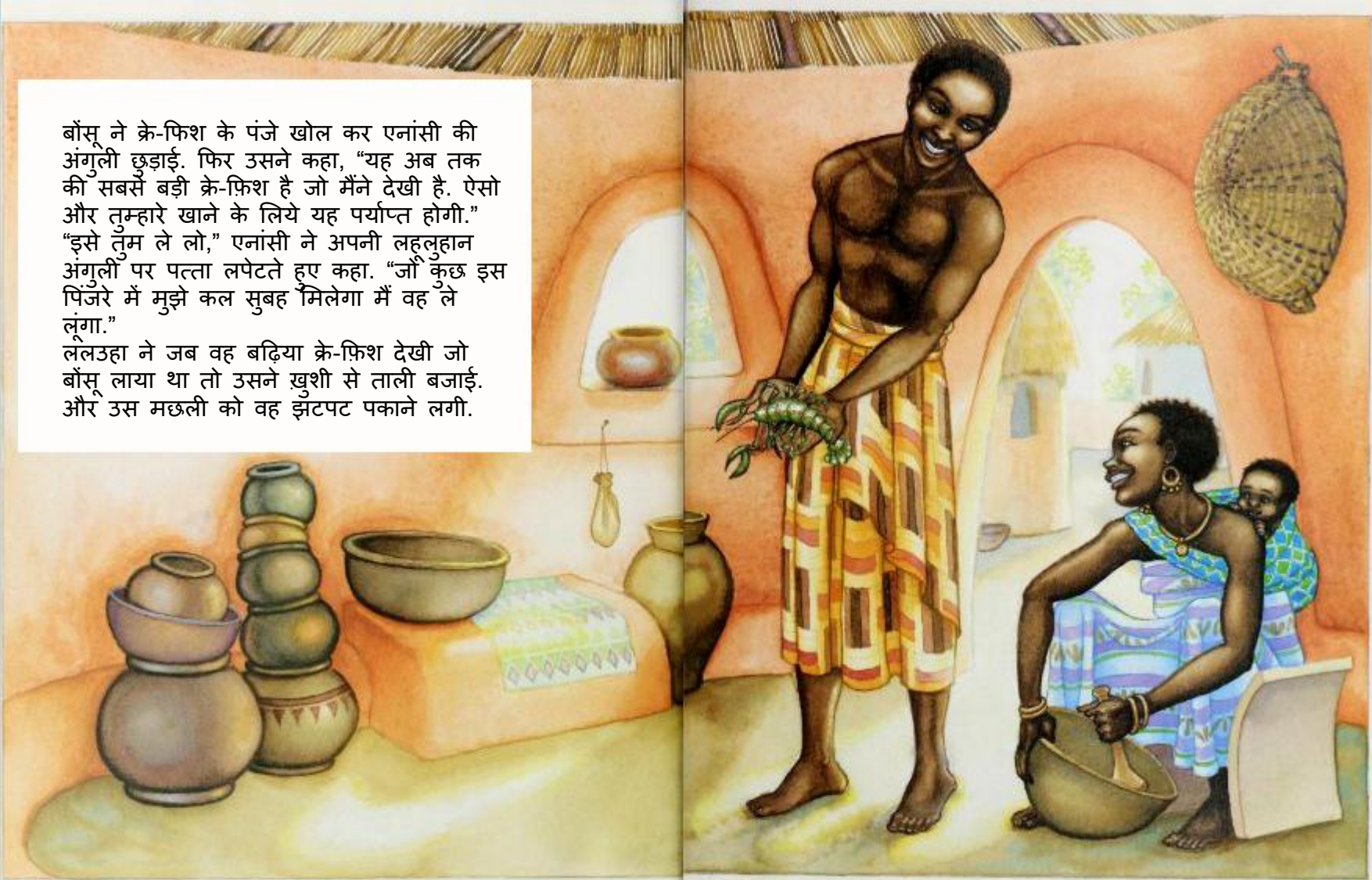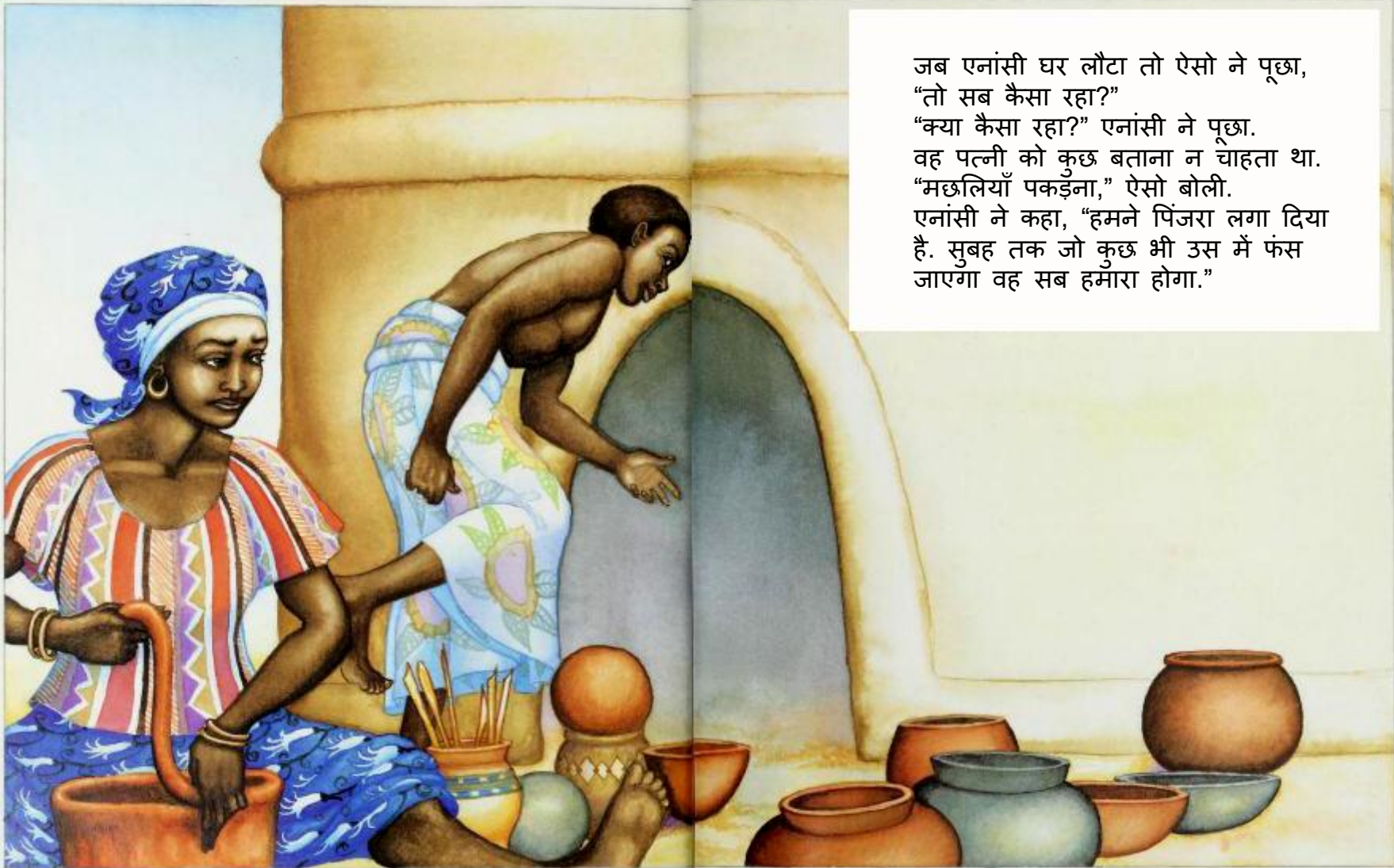
जब एनांसी घर लौटा तो ऐसो ने पूछा,
“तो सब कैसा रहा?”
“क्या कैसा रहा?” एनांसी ने पूछा.
वह पत्नी को कुछ बताना न चाहता था.
“मछलियाँ पकड़ना,” ऐसो बोली.
एनांसी ने कहा, “हमने पिंजरा लगा दिया
है. सुबह तक जो कुछ भी उस में फंस
जाएगा वह सब हमारा होगा.”

अगले दिन जैसे ही अँधेरा समाप्त हुआ और सुबह हुई, एनांसी और बोंसू अपने मछली के पिंजरे को देखने के लिये आये. नदी किनारे पहुंच कर उन्होंने देखा कि पिंजरे के आसपास सरकंडों में खलबली मची हुई थी.
दोनों भागते हुए नदी में उतर गये. उन्होंने पिंजरे का ढक्कन ऊपर से बंद कर दिया और खींच कर उसे पानी से बाहर ले आये. पिंजरा बहुत भारी था और उसके भीतर कोई बड़ा, काला जीव था, जो कुंडली मार कर बैठा था. उन्होंने पिंजरा झटपट नीचे रख दिया और दूर हट गये.
फिर *पुरूप!* पिंजरे का ढक्कन तड़ाक खुल गया. और एक बड़ा अजगर रेंगता हुआ बाहर आया. उसके शरीर पर कई गांठे और कूबड़ उभरे हुए थे.
"देखो उसे!" बोंसू चिल्लाया. "वो अजगर तुम्हारी मछलियाँ निगल गया है! उन्हें गिनो!"
एनांसी गिनने लगा, "एक, दो, तीन, चार......"
और तब तक अजगर अपने भारी-भरकम शरीर को खींच कर नदी में डुबकी लगा चूका था, *डुब्बब्ब्!*
एनांसी बोला, "बोंसू, इसे तुम मेरी बारी नहीं मान सकते. जो कुछ पिंजरे में अगली बार आयेगा वह मैं ही लूंगा. और हम यहीं रुक कर पिंजरे की निगरानी भी करेंगे."
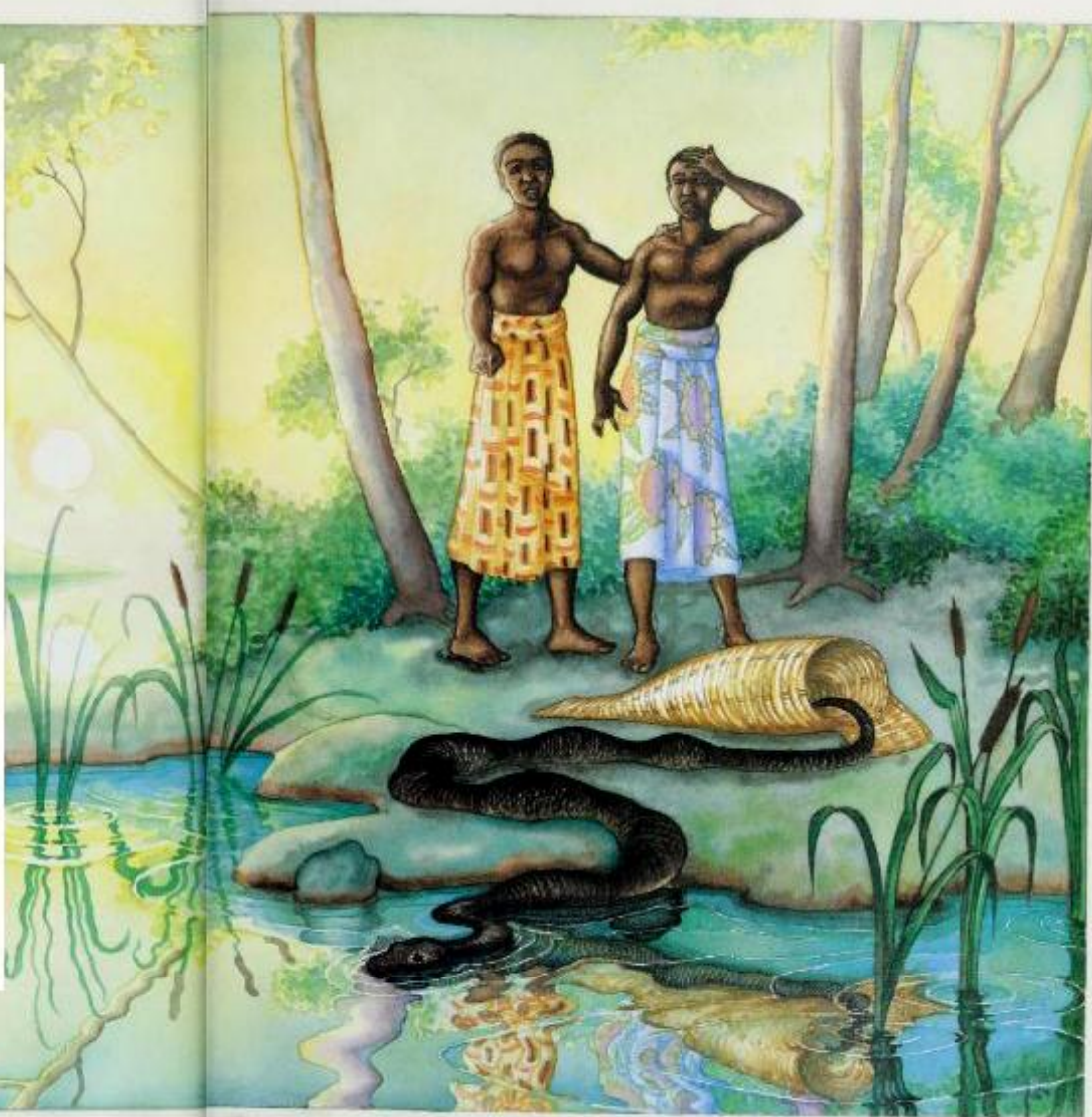
दोनों ने पिंजरा फिर से नदी में लगा दिया. समय बीता, और समय बीता, फिर और समय बीता. आखिरकार उन्होंने मछलियों के कूदने का आवाज़ सुनी.

अचानक *स्वूप...स्वूप...स्वूप!* नदी में सैंकड़ों अपोपोकिकि मछलियाँ उछल-उछल कर पानी से बाहर आ रही थीं और फिर पानी में डुबकी लगा रही थीं-सब नदी की ऊपरी दिशा में जा रही थीं. एनांसी उछल कर खड़ा हो गया और चिल्लाया, “पिंजरे में जाओ! पिंजरे के अंदर!”

“एक मगरमच्छ इनका पीछा कर रहा है!” बोंसू चिल्लाया.
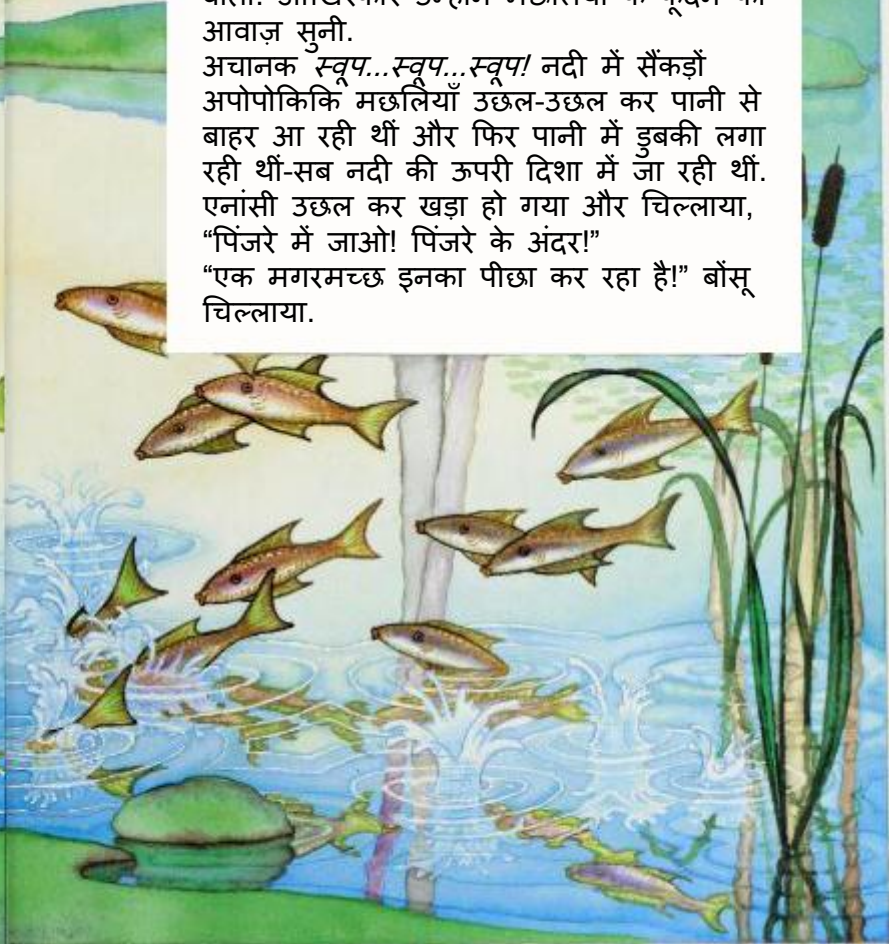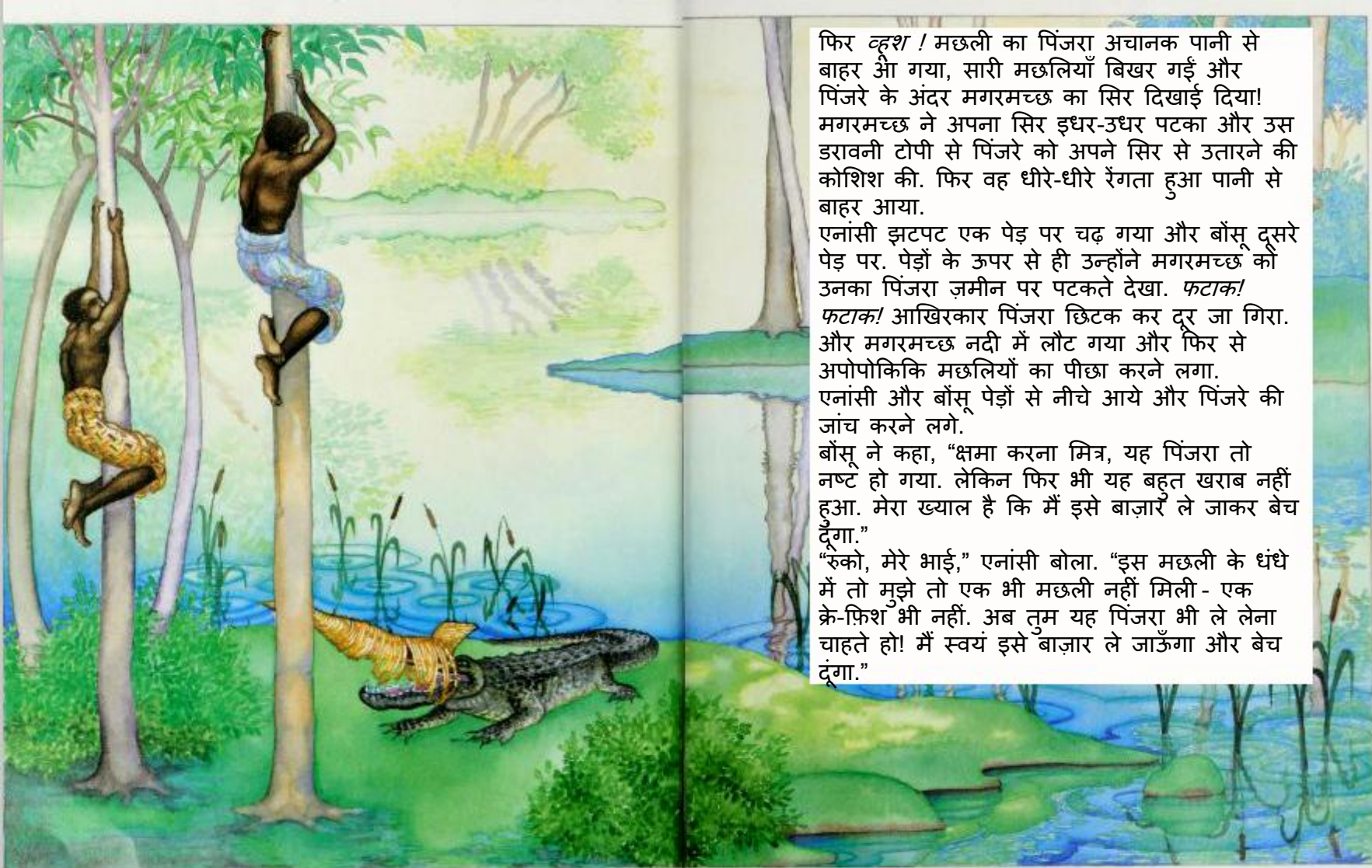
फिर *व्हूश !* मछली का पिंजरा अचानक पानी से बाहर आ गया, सारी मछलियाँ बिखर गईं और पिंजरे के अंदर मगरमच्छ का सिर दिखाई दिया! मगरमच्छ ने अपना सिर इधर-उधर पटका और उस डरावनी टोपी से पिंजरे को अपने सिर से उतारने की कोशिश की. फिर वह धीरे-धीरे रेंगता हुआ पानी से बाहर आया.

एनांसी झटपट एक पेड़ पर चढ़ गया और बोंसू दूसरे पेड़ पर. पेड़ों के ऊपर से ही उन्होंने मगरमच्छ को उनका पिंजरा ज़मीन पर पटकते देखा. *फटाक! फटाक!* आखिरकार पिंजरा छिटक कर दूर जा गिरा. और मगरमच्छ नदी में लौट गया और फिर से अपोपोकिकि मछलियों का पीछा करने लगा.

एनांसी और बोंसू पेड़ों से नीचे आये और पिंजरे की जांच करने लगे.

बोंसू ने कहा, “क्षमा करना मित्र, यह पिंजरा तो नष्ट हो गया. लेकिन फिर भी यह बहुत खराब नहीं हुआ. मेरा ख्याल है कि मैं इसे बाज़ार ले जाकर बेच दूंगा.”

“रुको, मेरे भाई,” एनांसी बोला. “इस मछली के धंधे में तो मुझे तो एक भी मछली नहीं मिली - एक क्रे-फ़िश भी नहीं. अब तुम यह पिंजरा भी ले लेना चाहते हो! मैं स्वयं इसे बाज़ार ले जाऊँगा और बेच दूंगा.”

एनांसी पिंजरा लेकर बाज़ार आ गया. उसने पिंजरा ज़मीन पर रख दिया और उसके निकट बैठ कर चिल्लाने लगा, "मछली का पिंजरा बिकाऊ है. मछली का पिंजरा बिकाऊ है."

लोगों ने देखा कि पिंजरा बुरी तरह टूटा हुआ था. उन्होंने गाँव के मुखिया को यह बात बतायी.

गाँव का मुखिया एनांसी के पास आया और बोला, "क्या तुम समझते हो कि मेरे गाँव के लोग मूर्ख हैं जो वह ऐसा पिंजरा खरीद लेंगे जो किसी काम का नहीं है? तुम हमारा अपमान कर रहे हो!"
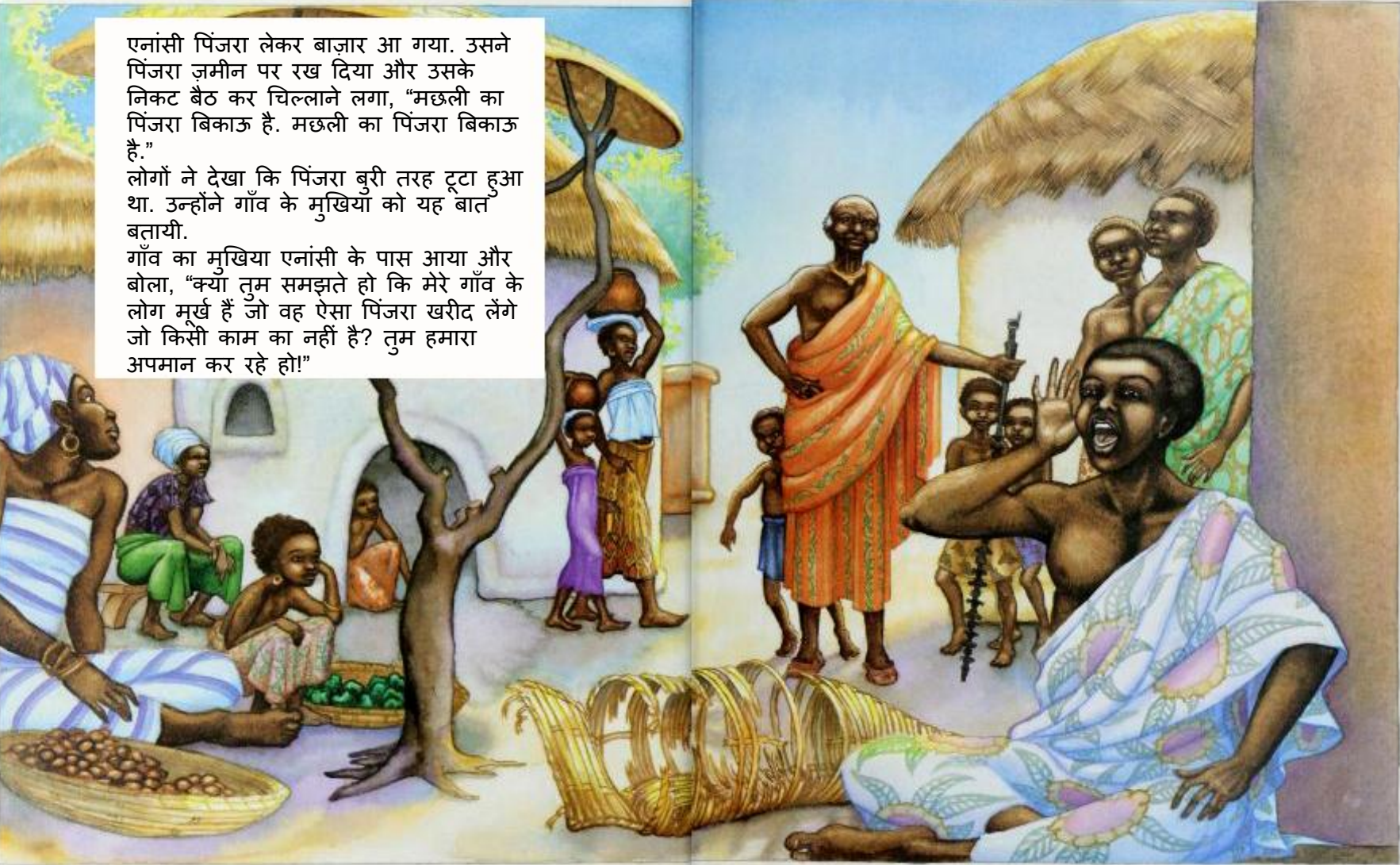
फिर मुखिया के आदेश पर एनांसी ने पिंजरा अपने सिर पर उठा लिया बाज़ार में चलते-चलते चिल्लाने लगा, “बेकार मछली का पिंजरा बिकाऊ है, बेकार मछली का पिंजरा बिकाऊ है.” लज्जा से एनांसी पानी-पानी हो गया. लोग अपनी हंसी रोक न पा रहे थे. बच्चे उसके पीछे-पीछे भाग रहे थे और चिल्ला रहे थे, *“नाह! नाह! नाह!”*

जब वह घर लौटा तो बोंसू उसके पास आया और बोला, “एनांसी, तुम एक मूर्ख को ढूंढ रहे थे जो तुम्हारे साथ मछलियाँ पकड़ने जाता. लेकिन उसे ढूँढने तुम्हें कहीं जाने की ज़रूरत नहीं थी. तुम स्वयं ही तो वह मूर्ख थे.”

एनांसी बोला, “लेकिन, बोंसू, तुम किस प्रकार के भागीदार थे? जब वह सब लोग मेरा मज़ाक उड़ा रहे थे, तब तुम्हें कम से कम अपमान तो स्वीकार करना चाहिए था.”
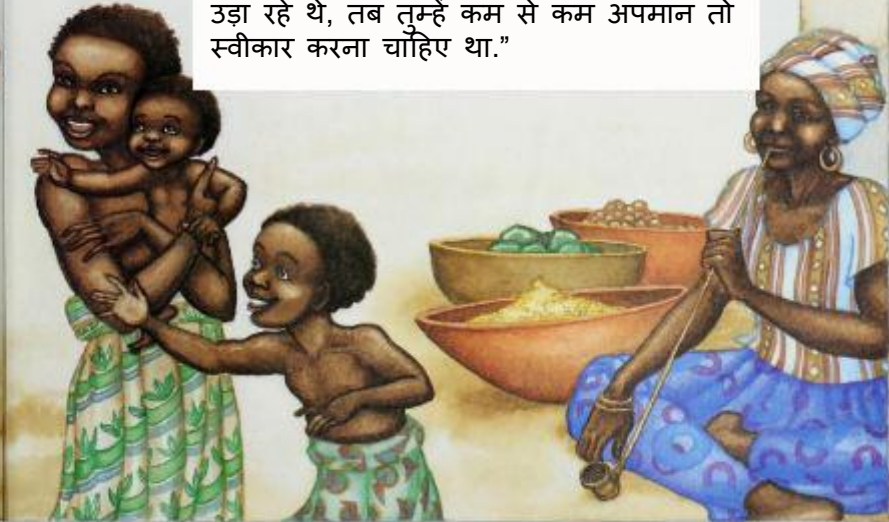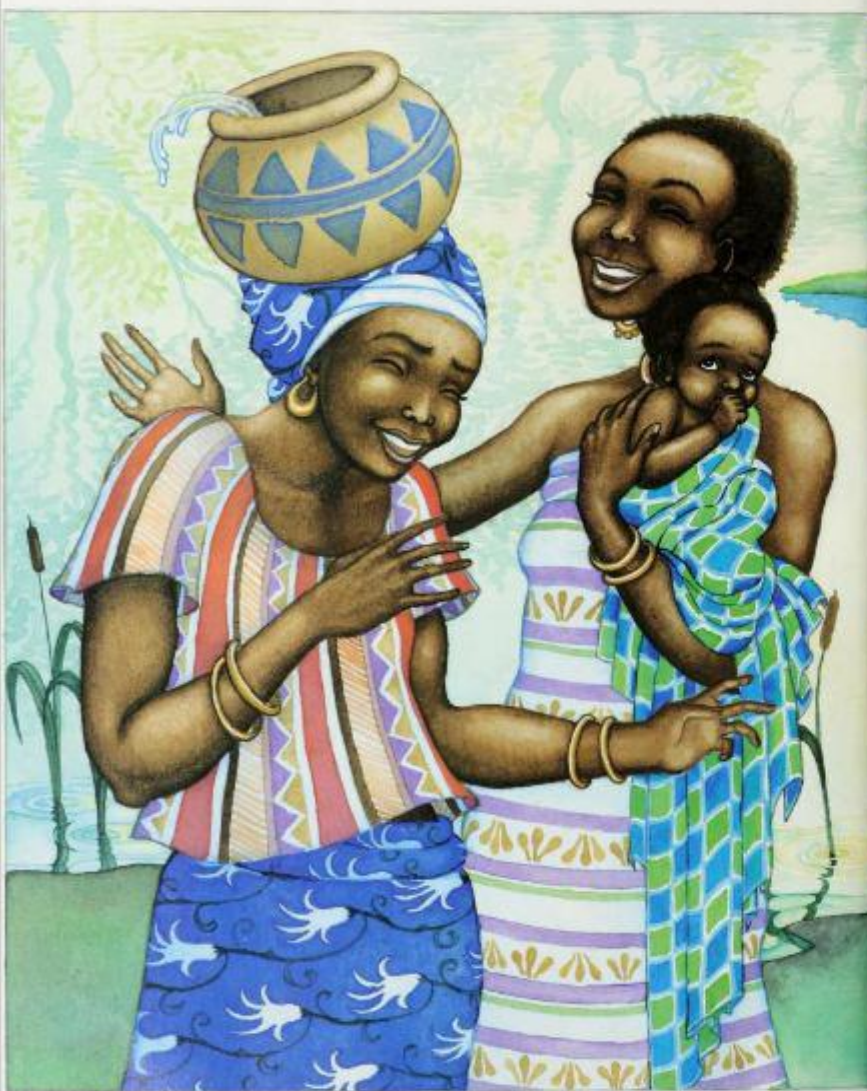
अगली सुबह ऐसो और ललउहा नदी किनार फिर मिलीं. वहां उन्होंने कुचले हुए सरकंडे और रौंदा हुआ नदी का किनारा देखा-यह सब उनके पतियों के मछली के धंधे का परिणाम था.

और जब ललउहा ने ऐसो को बताया कि कैसे उसके पति बोंसू ने चालाकी से एनांसी से सारा काम करवाया था तो ऐसो इतने ज़ोर से हंसी कि उसके सिर पर रखा पानी का मटका फिसल गया.
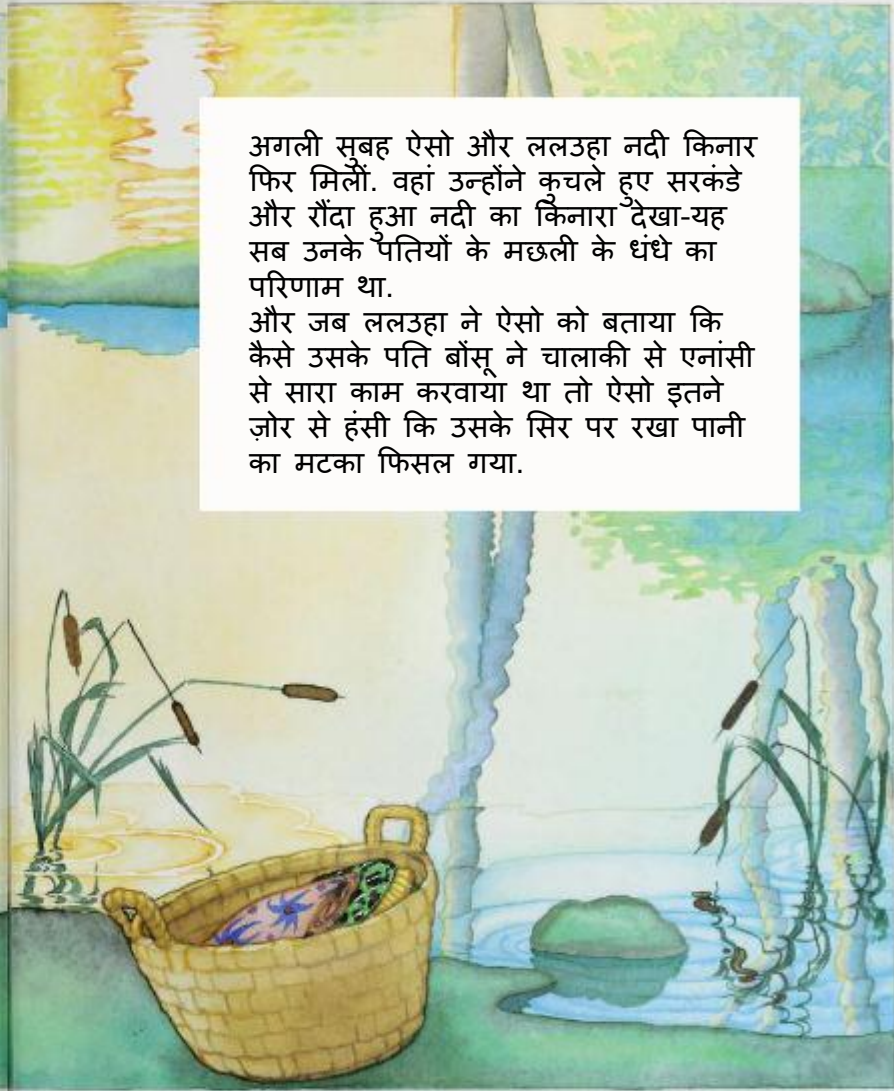
मटके को संभालते हुए उसने कहा,
"किसी ने सच ही कहा है: जब तुम
दूसरे के लिये गड्ढा खोदते हो तो तुम
स्वयं उस गड्ढे में गिरते हो."

समाप्त